डॉ0 प्रजापति सिंह

सहायक प्राध्यापकः शिक्षाशास्त्र विभाग

राजेन्द्र मिश्र महाविद्यालय, सहरसा, बिहार–852201

(C-06) विषयः जेण्डर, विद्यालय और समाज (Gender, School & Society)

पाठ्य–पुस्तकों में जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में विषय–वस्तु विश्लेषण (Content Analysis):

भारत में स्कूली शिक्षा कार्यक्रमों के अंतर्गत पाठ्यक्रम,पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण पद्धतियोंको बनाने के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF) 2005 दस्तावेज़ एक खाका प्रदान करता है। एनसीएफ़ 2005 के अनुसार,शिक्षा के उद्देश्य हमारे संवैधानिक मूल्यों के आधार पर तय किए गए हैं। यह दस्तावेज़ कहता है कि हम सारे बच्चों को जाति , धर्म संबंधी अंतर, लिंग और असमर्थता संबंधी चुनौतियों से निरपेक्ष रखते हुए स्वास्थ्य , पोषण और समावेशी स्कूली माहौल मुहैया करायें जो सीखने में मदद करें और उन्हें सशक्त बनाए। एन.सी.एफ. 2005 के नीति निर्देशक सिद्धान्तों में कहा गया है कि ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना, पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त, पाठयचर्या पाठ्यपुस्तक केन्द्रित ना होकर बच्चों को चहुँमुखी विकास के अवसर मुहैया करवाए , परीक्षा को लचीला बनाना और कक्षा की गतिविधियों से जोड़ना तथा एक ऐसी अधिभावी(over-riding) पहचान का विकास जिसमें प्रजातांत्रिक राज्य व्यवस्था के अंतर्गतराष्ट्रीय चिंताएँ समाहित हों।

पाठ्यपुस्तकें कैसी हों?

एन.सी.एफ़. कहता है कि पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकें शिक्षक को इस बात के लिए सक्षम बनाएँ कि वे बच्चों की प्रकृति और वातावरण के अनुरूप कक्षाई अनुभव आयोजित करें ताकि सारे बच्चों को अनुभव मिल पाएँ। आगे यह दस्तावेज़ कहता है कि ज्ञान को सूचना से अलग करने की आवश्यकता है और प्रत्येक साधन का उपयोग इस तरह किया जाना चाहिए कि बच्चों को खुद को अभिव्यक्त करने में, वस्तुओं के इस्तेमाल करने में, अपने परिवेश की खोजबीन करने में मदद मिल सके, साथ ही कक्षा के अनुभवों को इस प्रकार आयोजित किया जाए कि उन्हें ज्ञान सृजित करने का अवसर मिले। NCF के अनुसार रचनात्मक सीखना पाठ्यक्रम का एक हिस्सा होना चाहिए। पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों के लिए ऐसे अवसर और परिस्थितियाँ सृजित करें जो विद्यार्थियों के समक्ष चुनौती प्रस्तुत करें और उनमें रचनात्मकता और सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करें। नींव का मजबूत और स्थिर होना आवश्यक है, अतः प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के बच्चों को खोजने और तर्कसंगत सोच विकसित करने के मौके उपलब्ध कराने चाहिए जिससे कि वे अवधारणाओं, भाषा, ज्ञान, जाँच और सत्यापन प्रक्रिया पर पर्याप्त ज्ञान आत्मसात कर सकें। **विषय–वस्तु विश्लेषण के माध्यम से पाठ्–पुस्तकों में जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में निम्नलिखित बातें सुनिश्चित करने का प्रयास किया जा सकता है–**

Dr. Praja Pati Singh

1. पाठ्–पुस्तकों में प्रयोग किये गये किये गये चित्रों में:

   1.1 केवल पुरूष जेण्डर से सम्बन्धित चित्रों की संख्या एवं पेज नम्बर।
   1.2 केवल महिला जेण्डर से सम्बन्धित चित्रों की संख्या एवं पेज नम्बर।
   1.3 पुरूष एवं महिला जेण्डर का एक साथ चित्रों की संख्या एवं पेज नम्बर।
   1.4 पुरूष एवं महिला जेण्डर का एक साथ चित्रों में किस चित्र में कौन सा जेण्डर अधिक प्रभावी है उसकी संख्या एवं पेज नम्बर।
   1.5 पाठ्–पुस्तकों में प्रयोग किये गये किये गये चित्रों में जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण विश्लेषण।

2. पाठ्–पुस्तकों में प्रयोग किये गये किये गये उदाहरणों में:

   2.1 केवल पुरूष जेण्डर से सम्बन्धित उदाहरणों की संख्या एवं पेज नम्बर।
   2.2 केवल महिला जेण्डर से सम्बन्धित उदाहरणों की संख्या एवं पेज नम्बर।
   2.3 पुरूष एवं महिला जेण्डर का एक साथ उदाहरणों की संख्या एवं पेज नम्बर।
   2.4 पुरूष एवं महिला जेण्डर का एक साथ उदाहरणों में किस उदाहरण में कौन सा जेण्डर अधिक प्रभावी है उसकी संख्या एवं पेज नम्बर।
   2.5 पाठ्–पुस्तकों में प्रयोग किये गये उदाहरणों में जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में सम्पूर्ण विश्लेषण।

पाठ्–पुस्तकों में प्रयोग किये गये किये गये चित्रों में जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में विषय–वस्तु विश्लेषण:

समीक्षा:

कक्षा 3 का पाठ:3- **खेल-खेल में**, कक्षा 4 का पाठ-4: **खेल प्रतियोगिता**, कक्षा 5 का पाठ 5: **आओ खेलें खेल** सभी पाठों में जितने चित्र दिये गए हैं उनमें लड़कियों का प्रतिनिधित्व बेहद कम है वे कक्षा 5 में पहली बार ठीक से दिखाई देती हैं। यहाँ सभी चित्र संग्रह कर एक संग्रह के रूप में प्रस्तुत हैं:

Praja Pati Singh

कुछ इस ही तरह का चित्रण **"अलग अलग हैं सबके काम "** (कक्षा 3),खेती से जुड़े पाठों में (कक्षा 5 , पेज 104), कपड़े की कहानी(कक्षा 4) में बयान होता है , सभी चित्रों में पुरुष ही दिखाये गए हैं लेकिन इसके विपरीत यदि कक्षा 3 में पाठ 7 और 8 में **पानी भरने** और कक्षा 3 में पाठ 10 और कक्षा 4 में पेज 64 पर खाना बनाने की गतिविधि के चित्र देखें तो उनमें लड़के दिखाई नहीं देते। इस तरह यह पाठ "लड़कों के काम और लड़कियों के काम" की परंपरागत पितृसत्तात्मक अवधारणा का प्रसार करते प्रतीत होते हैं।

विद्यार्थियों! प्रस्तुत प्रकरण को समझाने के लिए राजस्थान राज्य के प्राथमिक स्तर (कक्षा 1से 5) विषयः पर्यावरण अध्ययन के पाठ्क्रम का सहारा लिया गया है।

प्रोजेक्ट कार्यः

आप सभी विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट कार्य के रूप में बिहार बोर्ड द्वारा नवीन पाठ्क्रम पर संचालित प्राथमिक स्तर (कक्षा 1से 5), उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा 6से 8) एवं माध्यमिक स्तर (कक्षा 9एवं10) विद्यालय के किसी भी स्तर के किसी एक विषय के पाठ्य–पुस्तक की उपर्युक्त विन्दुओं के आधार पर जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में विषय–वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) कर प्रोजेक्ट कार्य के रूप में जमा करना है।

विशेषः आप जिस भी स्तर के विद्यालय का चयन करेंगे उस स्तर में संचालित सभी कक्षाओं का तथा जिस विषय के पुस्तक का चयन करेंगे तो उस स्तर की सभी कक्षाओं में चलने वाली उस विषय के पुस्तक का जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में विषय–वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) करना है।

उदाहरणस्वरूपः मान लीजिए कि कोई विद्यार्थी उच्च प्राथमिक स्तर का विद्यालय तथा उसमें चलने वाली सामाजिक विज्ञान विषय के पाठ्–पुस्तक का चयन करता है। जो उस विद्यार्थी को कक्षा 6, 7 एवं 8 की सामाजिक विज्ञान विषय के सभी पाठ्–पुस्तकों का जेण्डर के परिप्रेक्ष्य में विषय–वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) करेगा।

विद्यार्थियों को सहायक सुझावः

इस संदर्भ में विद्यार्थियों को यह सुझाव है कि डॉ0 ब्रजेश शरण यादव एवं डॉ0 प्रजापति सिंह द्वारा **(C-05) विषयः अनुशासन और विषयों की समझ (Understanding Disciplines & Subjects) से संबंधित आपको भेजा गया अध्ययन सामग्रीः पाठ्य–पुस्तकों की विषय–वस्तु विश्लेषण (Content Analysis) पर चर्चा तथा** डॉ0 ब्रजेश शरण यादव द्वारा **आपको भेजा गया अध्ययन सामग्रीः** पाठ्य–वस्तु **विश्लेषण अर्थ, परिभाषा एवं उद्देश्य तथा** पाठ्य–वस्तु **विश्लेषण के मानदण्ड एवं स्रोत का सहारा लेना भी आपके लिए श्रेयष्कर हो सकता है।**

Dr. Praja Pati Singh